Research Inspiration
(Peer-reviewed, Open Access and indexed)
Journal home page: www.researchinspiration.com
ISSN: 2455-443X, Vol. 09, Issue-III, June 2024

महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में डॉ0 लोहिया के विचारः एक समीक्षात्मक अध्ययन (Dr. Lohia's Thoughts on Women's Empowerment: An Analytical Study)

Dr. Prakash Keshav[a,*]
[a] *Assistant Professor, G.D. College Sheohar, Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur, Bihar, (India).*

KEYWORDS
महिला सशक्तिकरण, डॉ. राममनोहर लोहिया, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, राजनीतिक अधिकार, आर्थिक स्वतंत्रता, समतामूलक समाज।

ABSTRACT
डॉ. राममनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के एक अग्रणी विचारक और समाज सुधारक थे, जिन्होंने समाज में समानता, स्वतंत्रता और महिलाओं के अधिकारों के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए। उनके विचार महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। लोहिया ने महिलाओं के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण को खारिज करते हुए लैंगिक समानता पर बल दिया और महिलाओं की भागीदारी को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक बताया। यह अध्ययन डॉ. लोहिया के विचारों का विश्लेषण करते हुए महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में उनके योगदान का मूल्यांकन करता है। साथ ही, यह उनके विचारों की वर्तमान समाज में प्रासंगिकता का भी आकलन करता है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि डॉ. लोहिया के विचार न केवल समकालीन समाज के लिए प्रेरणादायक हैं, बल्कि लैंगिक असमानता को समाप्त करने और एक समतामूलक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तावना

डॉ0 राम मनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जनपद (वर्तमान में अयोध्या जनपद) में स्थित अकबरपुर कस्बे में हुआ था। इनके पिता श्री हीरालाल लोहिया एक व्यापारी थे। उनके परिवार द्वारा पीढ़ियों से लोहे का व्यापार करने के कारण इनके परिवार के सदस्यों को 'लोहिया' कहा जाने लगा। लोहिया की अल्पायु (लगभग ढाई साल) में ही इनकी माता का निधन हो गया। अतः उनका पालन–पोषण उनकी दादी व चाची द्वारा किया गया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अकबरपुर के टंडन पाठशाला और विश्वेश्वर नाथ हाईस्कूल विद्यालय में हुई। वे अपनी कक्षा के होनहार एवं शिक्षकों के प्रिय विद्यार्थी थे। पिता के मुम्बई चले जाने पर उन्होंने अपनी शिक्षा मुम्बई के मारवाड़ी स्कूल में जारी रखी और 1925 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1927 में इंटर की परीक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की। वे उच्च शिक्षा हेतु कलकत्ता चले गये तथा वर्ष 1929 में बी0ए0 की परीक्षा कलकत्ता के विद्यासागर कालेज से उत्तीर्ण की। वर्ष 1932 में उन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में पी–एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की (कश्यप, 1990:3)।

डॉ0 राम मनोहर लोहिया का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे विद्यार्थी जीवन में ही राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जुड़ गये तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में रहकर समाजवादी मंच

*** Corresponding author**
E-mail: prakashkeshavmfp12@gmail.com (Dr. Prakash Keshav).
https://orcid.org/0009-0007-8863-2625
DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v9n3.04
Received 6th April 2024; Accepted 10th June 2024
Available online 30th June 2024
2455-443X /©2024 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

का गठन किया। वे 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में द्वितीय पंक्ति के प्रमुख नेता थे। उनके भाषण आलोचना तथा आँकड़ों से परिपूर्ण होते थे। भारत के समाजवादी आन्दोलन की प्रगति में उनका उल्लेखनीय योगदान है। उन्होंने भारतीय परिस्थितियों के अनुसार समाजवाद की मौलिक रचना की (रहमान, 2020)।

लोहिया लेखनी के धनी थे। उनके विचार मौलिक थे और वह सदैव जनमानस में जागरुकता उत्पन्न करते थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय उन्होंने लोगों को अपने लेखों के माध्यम से स्वतन्त्रता का मार्ग दिखाया। यह बड़े ही दुःख की बात है कि लोहियाजी का जीवनकाल बहुत कम रहा। मौलिक विचारक, अद्वितीय नेता, विख्यात सांसद और विद्रोही डॉ0 लोहिया 12 अक्टूबर 1967 को नई दिल्ली में 57 वर्ष की अल्पायु में ही चल बसे (शरद, 1972)।

डॉ0 लोहिया दलितों, पीड़ितों एवं शोषितों के मसीहा तथा किसानों, मजदूरों एवं महिलाओं के शुभ–चिन्तक के रूप में सदैव प्रसिद्ध रहे। वास्तव में डॉ0 लोहिया ने समाजसेवा और समाजवाद के स्थापन में अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था, जिसके लिए वे जीवन–पर्यन्त संघर्षरत् रहे (रेड्डी, 1990:14)।

गैर–बराबरी को लेकर बेचैनी और समरसता की खोज ने लोहिया को राजनीति तक ही सीमित न रखकर समाज और संस्कृति के सम्बन्ध में देश के हालातों पर चिंतन करने को मजबूर किया। उन्होंने जातिवाद, मार्क्सवाद, गांधीवाद, लिंग, भाषा, शिल्प, इतिहास, समाजवाद, खेल, अर्थशास्त्र और दर्शन जैसे विषयों पर विस्तार से अपने विचार प्रकट किए और नई सभ्यता के रूप में समाज की परिकल्पना की। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों को बखूबी पहचाना और उन पर मुखरता से लिखा भी। लोहिया ने अपने समय से आगे बढ़कर चिंतन किया और भावी बदलाव की बयार बहुत पहले ही ला दी थीं (शर्मा, 2021)।

ओंकार शरद् (1972) ने लोहिया के बारे में लिखा है, ''लोहिया गाँधीजी के सत्याग्रह और अहिंसा के अखण्ड समर्थक थे, लेकिन गाँधीवाद को अधूरा दर्शन मानते थे, वे समाजवादी थे, लेकिन मार्क्स को एकांगी मानते थे, वे राष्ट्रवादी थे, लेकिन विश्व सरकार का सपना देखते थे, वे आधुनिकतम आधुनिक थे लेकिन आधुनिक सभ्यता को बदलने का प्रयत्न करते रहते थे, वे विद्रोही और क्रांतिकारी थे, लेकिन शांति और अहिंसा के अनूठे उपासक थे''।

डॉ0 लोहिया वास्तव में समानता के जबरदस्त समर्थक थे। उनका यह मत था कि जाति–व्यवस्था तथा वर्गवाद ही भारत के पतन का प्रमुख कारण रहा है। इसी बात को ध्यान में रखकर उन्होंने 'जाति–उन्मूलन' आन्दोलन प्रारम्भ किया था। इस सम्बन्ध में उनका कहना था कि परम्परागत असमानता पर आधारित समाज में सभी लोगों को केवल समान अवसर प्रदान कर ही समानता नहीं लाई जा सकती, इसके लिए समाज के वंचित और कमजोर लोगों को विशेष अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि पिछड़े वर्ग के लोगों, महिलाओं, हरिजनों, आदिवासियों एवं अविकसित अल्पसंख्यकों को जब विशेष अवसर प्रदान किये जायेंगे तभी वे तरक्की के स्तर पर पहुँच पायेंगे (रेड्डी, 1990:16–17)।

डॉ0 लोहिया, यद्यपि आधुनिक सभ्यता के आलोचक थे, किन्तु समानता लाने के अभियान के अत्यधिक प्रशंसक रहे हैं। भारतीय समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता तथा सामाजिक अन्याय को देखकर ही उनके मन में अपने समाज के ढाँचे में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। अतः उन्होंने सात क्रान्तियों को प्रतिपदित किया। उन्हें यह विश्वास

था कि ये सप्त–क्रान्तियाँ ऐसी हैं जो न केवल भारत को ही बदल देंगी, वरन् जब ये सप्त–क्रान्तियाँ पूरी हो जायेंगी तो सम्पूर्ण विश्व को ही परिवर्तित कर देंगी (रेड्डी, 1990:17)।

समाज की संरचना और विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों का टूटना–बनना उत्पादन के साधनों पर निर्भर करता है। उत्पादन के साधनों पर जैसे–जैसे व्यक्ति का एकाधिकार होता जाता है, श्रमिक वर्ग का शोषण आरम्भ हो जाता है। इस शोषण में स्त्री और पुरूष दोनों सम्मिलित होते हैं। वैयक्तिक सम्पत्ति में वृद्धि के साथ नारी भी पुरूष की एक सम्पत्ति बन गई, एक वस्तु बन गई, वह पुरूष पर निर्भर हो गई और एक दास की तरह परिवार में रहने लगी। स्वतन्त्रता, अधिकार आदि उसके पास कुछ नहीं रहे। कुछ है उसके पास, तो बस परिवार की चाकरी करना। नारी शोषण की नींव आर्थिक ढाँचे पर मनुष्य के एकाधिकार से जन्म लेती है। समाजवादी विचारक इस व्यवस्था के विरोधी हैं (वर्मा, 2023)।

नारीवाद के अनुसार, स्त्री–पुरुष असमानता 'पितृसत्ता' का परिणाम है। 'पितृसत्ता' से आशय एक ऐसी समाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था से है, जिसमें पुरुष को स्त्री से अधिक महत्त्व और शक्ति दी जाती है। पितृसत्ता इस मान्यता पर आधारित है कि पुरुष और स्त्री प्रकृति से भिन्न हैं और यही भिन्नता समाज में स्त्री की असमान स्थिति को न्यायोचित ठहराती है।

स्त्री व पुरुष के बीच जैविक या लिंग–भेद प्राकृतिक और जन्मजात होता है, जबकि लैंगिकता समाजजनित है। स्त्री–पुरुष असमानता को अधिकांशतः प्रकृति ने नहीं, समाज ने पैदा किया है। 'पितृसत्ता' ने श्रम का कुछ ऐसा विभाजन किया है जिसमें स्त्री 'निजी' और 'घरेलू' किस्म के कामों के लिए जिम्मेदार हैं, जबकि पुरुष की जिम्मेदारी 'सार्वजनिक' और 'बाहरी' दुनिया में है। नारीवादी इस विभेद पर भी सवाल खड़े करते हैं। उनका कहना है कि अधिकतर स्त्रियाँ 'सार्वजनिक' और 'बाहरी' क्षेत्र में भी सक्रिय होती हैं। इसीलिए दुनियाभर में अधिकतर स्त्रियाँ घर से बाहर अनेक क्षेत्रों में कार्यरत हैं। लेकिन घरेलू कामकाज की पूरी जिम्मेदारी केवल स्त्रियों के कंधों पर है। नारीवादी इसे स्त्रिायों वेफ कंधे पर 'दोहरा बोझ' बताते हैं। हालाँकि इस दोहरे बोझ के बावजूद स्त्रियों को सार्वजनिक क्षेत्र के निर्णयों में ना के बराबर महत्त्व दिया जाता है। नारीवाद का मानना है निजी/सार्वजनिक के बीच यह विभेद और समाज या व्यक्ति द्वारा गढ़ी हुई लैंगिक असमानता के सभी रूपों को मिटाया जा सकता है और मिटाया जाना चाहिए। उनका स्पष्ट कहना था कि स्त्रियों को बराबरी का दर्जा देकर ही एक स्वस्थ और सुव्यवस्थित समाज का निर्माण किया जा सकता है। वे पुरुषों द्वारा लादी गई नारी की पराधीनता और स्त्रियों द्वारा उसकी सहज स्वीकृति के सख्त विरुद्ध थे। वे स्त्रियों को पुरुषों की तरह मुखर व निडर देखना चाहते थे (सिंह, 2017)।

लोहिया नर–नारी समता के सशक्त पक्ष में थे। उनकी सात क्रांतियों में नर–नारी समता एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम था। उनका मानना था कि पितृसत्ता भारतीयों की मानसिकता के मूल में अंतर्निहित है। महिलाओं पर हिंसा फैलाना, उन्हें हीन प्रजाति मानना और उनके साथ दुर्व्यवहार करना लंबे समय से भारतीय समाज की पहचान रही है (यादव, 2010)। उनका कहना था कि 'स्त्री समाज के उत्पीड़न और दमन की परम्परा उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव सभ्यता। संसार में जितने भी प्रकार के अन्याय इस पृथ्वी को विषाक्त कर रहें हैं, उनमें से सबसे बड़ा अन्याय नर और नारी के भेद का है। संसार की विशाल मानवता किसी न किसी रूप में समता की इच्छुक तो है, लेकिन आधी से ज्यादा मानवता नारी की स्वतंत्रता के प्रति उदासीन है। आज भी अधिकतर स्त्रियों को सामूहिक जीवन में पुरूष के बराबर

भाग लेने का अधिकार नहीं है'। संसार की गरीबी के खिलाफ चाहें कितनी लड़ाईयाँ लड़ी जायें, वे उस समय तक सफलता प्राप्त नहीं कर सकतीं, जब तक कि समाज में नारी को उसका मौलिक अधिकार नहीं दिया जाएगा (यादव, 2017)।

इस तथ्य की गहरी व्याख्या करते हुए डॉ0 लोहिया ने संसार में अनेक प्रकार के भेदों से जाति भेद और नर–नारी भेद को सबसे ज्यादा खतरनाक बताया है। भारतीय सन्दर्भ में उनका मत बड़ा ही स्पष्ट था कि 'भारत की आत्मिक शक्ति में इतनी गिरावट का मुख्य कारण जाति प्रथा और नारी वंचन है, क्योंकि बिना स्त्री की भागीदारी के सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक आन्दोलन को आगे बढ़ाया नहीं जा सकता। उन्हीं के शब्दों में कहें तो 'समाजवादी आन्दोलन में यदि स्त्रियाँ भाग नहीं लेती हैं या उनको भाग लेने का अवसर नहीं दिया जाता है तो यह सारा आन्दोलन बिना वधू के विवाह जैसा लगेगा'' (लोहिया, 1963)।

प्रत्येक कार्य में सहयोग के लिए अपरिहार्य नारी प्राचीन काल से दासता का शिकार रही है। बालिका, युवती, वृद्धा किसी को भी स्वतंत्र नहीं रखा गया है। मनुस्मृति (5.148) में कहा गया है कि ''स्त्री बालकपन में पिता के वश में, तरूणाई में पति के वश में, पति के मरणोंपरान्त पुत्रों के वश में रहे''। भारतीय संस्कृति में नर का जन्म सुखद और नारी का दुःखद समझा जाता है। इसका मुख्य कारण भारत में व्याप्त दहेज–प्रथा है। वधू की योग्यता, शिक्षा, सुन्दरता आदि तो गौण हैं। वधू–विवाह में वर पक्ष दहेज की अधिक मात्रा से ही प्रभावित होता है। जिस प्रकार गाय दूध की मात्रा से नहीं, उसके बछड़ा नीचे होने से क्रेता के लिए मूल्यवान होती है, उसी प्रकार वधू योग्यता से नहीं, दहेज से ही अच्छे घर में विवाहित होती है। विवाह की निमन्त्रण की सुन्दरता, दी जानेवाली वस्तुओं का मूल्य, कण्ठियों की कीमत तथा अन्य तड़क–भड़क वर–वधु के आत्म–मिलन से अपेक्षाकृत अधिक महत्व की समझी जाती है। लोहिया (1954:7) ने कहा है कि, ''उनकी शादियों का वैभव आत्मा के मिलन में नहीं है, जिसे प्राप्त करने का नव–दम्पति प्रयत्न करते हैं, बल्कि बीस लाख की कण्ठियों और पचास हजार से भी ज्यादा कीमती साड़ियों में है।''

लोहिया का मानना था कि, मनुस्मृति, वर्णाश्रम व्यवस्था, और धार्मिक कर्मकाण्ड आधुनिक सभ्यता में मनुष्य की समता एवं स्वाधीनता के रास्ते में बड़े बाधक तत्त्व हैं। बिना इनसे निपटे हम नये समाज का निर्माण नहीं कर सकते। परम्परा के नाम पर ये सभी व्यवस्थाएँ स्त्री–विरोधी और स्त्री की निजी दुनिया के खिलाफ हैं। लोहिया पहले ऐसे विचारक ठहरते हैं, जो घरेलू–कामगार स्त्रियों की दैनन्दिन यातनाओं को न सिर्फ महसूस करते हैं बल्कि बेवाकी से व्यक्त भी करते है।'' 2 अगस्त 1966 को संसद में संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि, ''मर्द के मुकाबले एक औरत घर में ज्यादा देर रहती है, बाहर नहीं निकती है तो कम से कम प्रधानमंत्री इतना करायें कि फर्श से लेकर छत तक धुँआ निकलने के लिए नाली या चिमनी का इंतजाम किया जाये जिससे औरतों की आँखे बचें, इसके अलावा पानी निकालने या दूर ले जाने में बहुत तकलीफ होती है।.... जहाँ तक अन्न का सम्बन्ध है, यह सही है कि सभी भूखे मरते हैं लेकिन औरतों और बच्चों पर यह आफत ज्यादा आती है'' (त्रिपाठी, 2011:40)।

लोहिया (1952) के अनुसार घरेलू और सार्वजनिक स्तर पर नीति–निर्माण की प्रक्रियाओं में भागीदारी महिला सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण संकेतक है। लोहिया के चार–स्तंभीय राज्य के दृष्टिकोण के आधार पर महिलाओं के सशक्तिकरण का अंतिम लक्ष्य आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन के माध्यम से सभी का कल्याण,

राजनीतिक क्षेत्र में समान भागीदारी और जाति, वर्ग या लिंग की परवाह किए बिना सामाजिक क्षेत्र में पारस्परिक सहायता है। इस प्रकार, महिलाओं का सशक्तिकरण ऊपर से नहीं थोपा जा सकता। इसे नीचे से ऊपर की ओर बढ़ना चाहिए। लोहिया कहते थे कि सशक्तीकरण का लक्ष्य तीन बातों पर निर्भर करता है। पहला लोगों के ह्नदय, दूसरा उनकी जिंदगी और तीसरा सामाजिक संरचना में परिवर्तन लाना। महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण का मुद्दा पिछले कुछ दशकों से चर्चा का विषय रहा है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अन्य प्रयास किए जाने की भी जरूरत है। राम मनोहर लोहिया ने जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की समान सहभागिता सुनिश्चित करने की लड़ाई लड़ी। लोहिया इस विषय में पूरी तरीके से आश्वस्त थे कि भारत की अवनति के लिए जातिगत और लैंगिक भेदभाव मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। उनका मानना था कि भले ही राजनीति में महिलाओं को आरक्षण दे दिया जाए लेकिन जब तक महिलाएं सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त नहीं होती हैं तब तक समानता और विकास का सपना कोसों दूर ही रहेगां (शर्मा, 2021)। लोहिया सभी वर्ग की महिलाओं को पिछड़ा ही मानते थे (लोहिया, 1965)।

डॉ0 लोहिया नर–नारी समानता के प्रबल पैरोकर थे। वे स्त्रियों को पुरूष की पराधीनता के खिलाफ आवाज बुलंद करने की हमेशा हिम्मत देते थे। उनका स्पष्ट कहना था कि स्त्रियों को बराबरी का दर्जा देकर ही एक स्वस्थ और सुव्यवस्थित समाज का निर्माण किया जा सकता है। वे पुरूषों द्वारा लादी गई नारी की पराधीनता और स्त्रियों द्वारा उसकी सहज स्वीकृति के सख्त विरूद्ध थे। उन्हें कतई पसंद नहीं था कि औरतें घूंघट और पर्दे में रहें और पुरूष समाज उनका शोषण और अनादर करता रहें। वे स्त्रियों को पुरूषों की तरह मुखर व निडर देखना चाहते थे। यही वजह है कि उन्हें ऐसे स्त्री–चरित्र पसंद थे जिनमें अपने स्वाभिमान की रक्षा और दमदारी से अपनी बात कहने की ताकत थी (सिंह, 2015)।

लोहिया ने समाज में व्याप्त आदर्श नारी की उस अवधारणा को सिरे से खारिज कर दिया जिसमें एक स्त्री से पतिव्रता होने की अपेक्षा की जाती है (शर्मा, 2021)। लोहिया इस तथ्य से भलीभांति अवगत थें कि भारतीय समाज अति–धार्मिक है और इसलिए उन्होंने नारीवाद की बहस को पौराणिक सन्दर्भ दिया। लोहिया के नारीवादी विचार को उनके ''द्रौपदी और सावित्री'' नामक एक लेख से समझा जा सकता है। उन्होंने कहा कि सावित्री और सीता को आदर्श स्त्री और पौराणिक व्यक्तित्व के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। सावित्री और सीता के लिए लोहिया के मन में बेहद सम्मान था, लेकिन उनके अनुसार 'निष्ठा और शुद्धता' महिला के व्यक्तित्व के कुछ महत्वपूर्ण गुणों में से एक थे, परन्तु केवल निष्ठा और शुद्धता तक नारित्व को नहीं सीमित रखना चाहिए। उन्होंने 'आदर्श नारीत्व' की उस अवधारणा को स्वीकार करने से इनकार कर दिया जो पतिव्रत धर्म के इर्द–गिर्द घूमती थी (कुमार, 2019)। लोहिया द्रौपदी को नारीत्व का सबसे शक्तिशाली प्रतीक मानते थे जिनके पास तेज बुद्धि थी और अपने मन की बात कहने का साहस भी था। उन्होंने यह भी आलोचना की और ध्यान दिलाया कि द्रौपदी का गुस्सा सिर्फ कौरवों के खिलाफ नहीं था, बल्कि उनके पतियों के खिलाफ भी था, जो उन्हें अपनी संपत्ति का एक मूल्यवान टुकड़ा मानते थे।

लोहिया ने सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका पर बल दिया। आजादी के बाद और आज तक भी प्रतिनिधि संस्थाओं में महिलाओं की कमजोर उपस्थिति के सवाल को लोहिया संसद से

सड़क तक मजबूती से उठाते रहे। पितृसत्तात्मक व्यवस्था को लोहिया समाजवाद के मार्ग में बड़ी बाधा मानते थे। उन्हें लगता था कि नर–नारी में समानता के बिना समाजवाद के लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सकता। लोहिया का मानना था कि स्त्री विमर्श एक बेहतर अंजाम तक पहुँचे, इसके लिए स्त्रियों को निर्भीक, साहसी और सजग होना होगा। महिलाओं को पर्दा प्रथा, देवदासी प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि बुराइयों के विरूद्ध एकजुट होना चाहिए (अंगिरा, 2021)।

अपने पूरे जीवन में लोहिया ने इस पहलू पर जोर दिया कि महिलाएँ अपनी गरिमा, आजादी और स्वायत्तता चाहती हैं तथाकथित पवित्रता या नैतिकता या देवी का दर्जा नहीं (कुमार, 2019)। लोहिया द्रोपदी के माध्यम से एक तरफ परंपरा को पुनर्मूल्यांकित करते हैं, तो दूसरी तरफ इस विलक्षण व्यक्तित्व के माध्यम से भारतीय आधुनिकता का एक मॉडल प्रस्तुत करके तमाम ज्ञात–अज्ञात पहलुओं की जो मीमांसा करते हैं वह अभूतपूर्व है। नारी को मुक्त करने की वकालत करते हुए लोहिया कहते हैं कि नारी को गठरी नहीं बनाना है। नारी को इतना स्वयं काबिल होना चाहिए कि वक्त आने पर पुरूष की गठरी अपने साथ ले सके (यादव, 2017)।

लोहिया का मानना था कि महिलाओं के उत्पीड़न और दमन की कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव सभ्यता। संसार में जितने भी प्रकार के अन्याय इस पृथ्वी को विषाक्त कर रहे हैं, उनमें से सबसे बड़ा अन्याय नर–नारी के मध्य व्यापक स्तर पर व्याप्त भेदभाव है। संसार की समस्त जनता किसी न किसी रूप में समता की इच्छुक तो है, लेकिन अधिकांश लोग महिलाओं की स्वतन्त्रता के प्रति उदासीन हैं। आज भी अधिकांश महिलाओं को सामूहिक जीवन में पुरूष के बराबर भाग लेने का अधिकार नहीं है'...संसार की गरीबी के खिलाफ चाहें कितनी लड़ाईयाँ लड़ी जायें वह उस समय तक सफलता प्राप्त नहीं कर सकती जब तक कि समाज में नारी को उसका मौलिक अधिकार नहीं दिया जाएगा। इतना ही नहीं इस तथ्य की गहरी व्याख्या करते हुए संसार में अनेक प्रकार के भेदों से जाति भेद और नर–नारी भेद को सबसे ज्यादा खतरनाक बताया है। भारतीय संदर्भ में भी उनका मत बड़ा ही स्पष्ट था कि भारत की आत्मिक शक्ति में इतनी गिरावट का मुख्य कारण जाति प्रथा और नारी वंचन है। लोहिया (1963) का कहना था कि ''समाजवादी आन्दोलन में यदि स्त्रियाँ भाग नहीं लेती हैं या उनको भाग लेने का अवसर नहीं दिया जाता है तो यह सारा आन्दोलन बिना वधू के विवाह जैसा लगेगा।''

पुरुष–महिला समानता के मुद्दे को लोहिया सिर्फ भारत की सीमाओं तक ही कैद नहीं रखना चाहते थे, वरन इस समता को वे सभी राष्ट्र, धर्म, जाति और वर्ग तक पहुंचाने में विश्वास रखते थे। उनका यह दृढ विश्वास रहा कि जिस समाज में जन्म और लिंग के आधार पर हाशिए पर के लोगों के साथ भेदभाव किया जाता है, उस समाज से सामाजिक, नैतिक और भौतिक किसी तरह के विकास की आशा नहीं की जा सकती। आधी आबादी अगर समाज में वंचित या परित्यक्ता है, तो इसका कारण पितृसत्तात्मक समाज के पुरुषों के विचार में बैठी एक मानसिकता है जिसे आर्थिक या विधायन संबंधी सुधारों से नहीं बदला जा सकता। लोहिया इसका समाधान राजनीति में इनकी अधिकतम भागीदारी के रूप में देखते थे (यादव, 2010)।

लोहिया बहुपत्नी–प्रथा के भी घोर विरोधी थे। उनका मत था कि यदि पत्नी एक पति रख सकती है तो पति को भी केवल एक ही पत्नी रखने का अधिकार होना चाहिए। उन्होंने मुस्लिम–धर्म की इस स्वतंत्रता की कटु आलोचना की है, जिसके अनुसार एक मुसलमान को चार पत्नी तक रखने का अधिकार दिया गया है, भले ही

कुरान में पत्नियों के साथ सम–व्यवहार का आदेश दिया गया हो। उनका विश्वास था कि जब सर्वगुण संपन्न द्रौपदी अपने पाँच पतियों के साथ सम–व्यवहार न कर सकी, तो साधारण मानव के लिए पत्नियों के साथ सम–व्यवहार कर सकना असंभव और अस्वाभाविक है। विवाह, प्रेम, यौन–आचरण आदि विषयों में वे स्वतंत्रता और समता के पक्षधर थे। उन्हें समानता की चाह थी। उन्हें भारतीय पुरूष के इस विकृत विचार पर बड़ा क्रोध था कि वह अपनी स्त्री को सावित्री की तरह पतिव्रता देखना चाहता है, चाहे वह स्वयं नित्य कई स्त्रियों से मिलता हो। सब भूलकर अपनी औरत से उम्मीद करता है कि उसके मन, मस्तिष्क, ख्यालों में सिर्फ वही रहे (वर्मा, 1978:21)।

महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा के सबसे घिनौने और जटिल स्वरूप घरेलू हिंसा पर भी डॉ0 लोहिया ने गंभीर चिंता प्रकट की। उन्होंने इसके लिए मर्दवादी मानसिकता के साथ–साथ घोर विषमता वाली व्यवस्था को जिम्मेदार ठहराया, जिसमें बलवान कमजोर पर अपना जोर चलाता है। लोहिया के अनुसार, "भारतीय मर्द इतना पाजी है कि औरतों को वह पीटता है। शायद सारी दुनिया में भी औरतें पिटती होंगी, लेकिन जितनी हिंदुस्तान में पिटती हैं इतनी और कहीं नहीं। हिंदुस्तान का मर्द सड़क पर, खेत पर, दुकान पर इतनी ज्यादा जिल्लत उठाता है और तू–तड़ाक सुनता है, जिसकी सीमा नहीं। नतीजा यह होता है कि वह पलटकर जवाब तो दे नहीं पाता, दिल में भरे रहता है और शाम को जब घर लौटता है, तो घर की औरतों पर सारा गुस्सा उतारता है। फिर जब औरतों को गुस्सा चढ़ता है तो औरतें बच्चों पर उतारती हैं और ऐसे ही देश पर चीन जैसा देश आक्रमण करता है। जुल्म का चक्र चलता रहता है।" लोहिया इस चक्र को तोड़ने की बात करते हैं (शर्मा, 2021)।

स्त्रियों में पाई जाने वाली पतिव्रता धर्म और शुचिता को लेकर भी लोहिया ने एक अलग दृष्टि प्रदान की है। उनका मानना रहा कि इन दो के अलावा भी बहुत सारी विशेषताएं स्त्रियों में मौजूद होती हैं। शुचिता और पतिव्रता को अन्य विशेषताओं की कीमत पर कतई महिमामंडित नहीं किया जा सकता। साथ ही इन दोनों के दायरे में महिलाओं को कैद कर रखना भी तर्कसंगत नहीं (यादव, 2010)।

नारी स्वतन्त्रता का प्रतिपादन करते हुए डॉ0 लोहिया ने कहा कि आधुनिक पुरुष अपनी स्त्री को एक ओर सजीव, कान्तिपूर्ण और ज्ञानी चाहता है, दूसरी ओर अधीनस्थ भी। पुरुष की यह परस्पर विरोधी भावनाएं बहुत ही विडम्बनापूर्ण, काल्पनिक एवं अवास्तविक हैं, क्योंकि परतन्त्रता की स्थिति में ज्ञान, सजीवता एवं तेज का प्रादुर्भाव कैसे हो सकता है? डॉ0 लोहिया ने नर के इस प्रकार के भरे हुए मस्तिष्क को जागृत किया और कहा कि ''या तो औरत को बनाओ परतन्त्र, तब मोह छोड़ दो, औरतों को कोई बढ़िया बनाने की। या फिर बनाओ उसको स्वतन्त्र, तब वह बढ़िया बनेगी, जिस तरह से मर्द बढ़िया होगा''।

समाजवाद या समतावाद डॉ0 लोहिया के जीवन और विचारों में पूर्णरूपेण घुल–मिल गया था। उनका यह वाक्य कि ''मैं आधा मर्द और आधा नारी हूँ'', नारी के प्रति उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। समाजवाद की स्थापना के लिए वे समाज के अर्द्धांग को पूर्ण चेतन, सजीव, समर्थ आदि बनाना चाहते थे। वे अर्द्धांग को घर के अन्दर छुपाकर रखना, दबाकर रखना, तिजोड़ी में बन्द करके रखना आदि को गम्भीर अपराध मानते थे। उनके विचारों में पर्दा–प्रथा नैतिकता, चरित्र और पगति के विपरीत है। इस सम्बन्ध में उनका सुझाव था कि लड़कियों की स्वयंसेवक टोलियाँ जगह–जगह नारियों से

पर्दा हटाकर इस प्रथा को समाप्त कर सकती हैं (लोहिया, 1969:22)।

लोहिया उदारवादी हिन्दुत्व के हिमायती थे और यह मानते थे कि अनुदार हिन्दुत्व देश की एकता को भी विच्छन्न कर सकता है। अनुदार हिन्दुत्व जाति, स्त्री, सम्पत्ति और अन्य धर्मानुयायियों के सम्बन्ध में जो दृष्टिकोण रखता है उसी को डॉ0 लोहिया हिन्दू समाज और भारत के लिए दुर्भाग्यपूर्ण मानते थे। वे उस दृष्टिकोण को समता–विरोधी भी कहते थे और अदूरदर्शितापूर्ण भी। नर–नारी समता, जाति–विहीन समाज व्यवस्था और सम्पत्ति के प्रति मोह के त्याग को वे उदार हिन्दुत्व के लक्षण मानते थे। वे पुरुषों से आशा करते थे कि वे नारियों को हर हालत में अपने बराबर का दर्जा दें। जाति–प्रथा को केवल भारत को बार–बार बाँटने का ही दोषी नहीं मानते थें, बल्कि जब वे देखते थे कि उदार हिन्दू मानसिक तौर पर उदार मूल्यों को मान लेता है तो उसका कारण भी जाति का बन्धन ही है। सम्पत्ति के मोह के सम्बन्ध में तो उनका अपना जीवन एक सटीक और अनुकरणीय उदाहरण है। भारतीय धर्म, वेद, पुराण और परम्परा को वे सामाजिक प्रक्रियाओं के माध्यम से देखते थे जिनसे किसी भी जाति का निर्माण होता है। भारतीय परम्परा को दूसरे देशों की परम्पराओं से समन्वय करके उनके बीच से एक ऐसी परम्परा की तलाश करना चाहते थे, जो देश, जाति, वर्ग आदि परे एक विश्वस्तरीय परम्परा हो (लोहिया, 1954: 24)।

भारतीय समाज के विकास के लिए लोहिया ने जाति–प्रथा, नर–नारी असमानता, अस्पृश्यता, रंग–भेद नीति, सांप्रदायिकता जैसी कुरीतियों पर गहरा प्रहार किया है। उन्होंने जिस सामाजिक समता का प्रतिपादन किया है, वह जनस्पर्शी और क्रान्तिकारी है। लोहिया इसे राजनैतिक और वैधानिक रूप देना चाहते थे। उनका मानना था कि भारतीय समाज को जब तक सामाजिक समता प्राप्त नहीं होती, तब तक आर्थिक समता कोई अर्थ नहीं रखती। लोहिया (1955:62) ने यह भी कहा था कि यदि कोई पूँछे कि, ''औरत को किस तरह की आजादी देना चाहते हो? तो मैं बिल्कुल गोली की तरह जवाब दे दूँगा। मेरा जवाब है कि मैं औरत को उस हद तक आजादी देना चाहता हूँ जितनी कि मर्द को देना चाहता हूँ''।

लोहिया स्त्री के दुख को जानते थे, तथा उसे अनुभव भी करते थे। यह आकस्मिक नहीं है कि उन्होंने वर्ण व्यवस्था के भीतर स्त्री को 'पाँचवाँ वर्ण' कहा और वर्ण व्यवस्था को परम्परा का 'नासूर' बताते हुए समाज के भीतर दलित और स्त्री को सबसे ज्यादा वंचित माना, अर्थात् मुक्ति मार्ग के लिए दलित और स्त्री का निर्धारण एक साथ किया। उनका कहना था कि, ''जब तक शूद्रों–हरिजनों और स्त्रियों की सोयी हुई आत्मा का जगना देख कर उसी तरह खुशी नहीं होगी जिस तरह किसान को बीज का अंकुर फूटते देख कर होती है, और उसी तरह जतन तथा मेहनत से उसे फूलने–फलने और बढ़ाने की कोशिश न होगी, तब तक हिन्दुस्तान में कोई भी वाद, किसी तरह की नयी जान, लायी न जा सकेगी'' (लोहिया, 1954:23)।

लोहिया ने समकालीन भारत की शक्ति संरचना में असमानताओं, बहिष्करणों और शोषण को समझने के लिए एक अंतर–वर्गवादी दृष्टिकोण का निर्माण (कुमार, 2010:64)। लोहिया (1953) के अनुसार, वे सभी जो सोचते हैं कि आधुनिक अर्थव्यवस्था के माध्यम से गरीबी हटाने के साथ, जाति और लिंग का अलगाव, स्वचालित रूप से गायब हो जाएगा, वे एक बड़ी गलती करते हैं। गरीबी और जाति व लिंग के अलगाव धरती पर दूसरे अन्यायों को पनपते में सहायता देते हैं। भारत में सामाजिक असमानता का उनका विश्लेषण जाति, वर्ग और लिंग की तिकड़ी पर केंद्रित था। लोहिया ने

'भारतीय समाज को पुनर्जीवित करने और जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को समानता देने' के बीच एक सीधा संबंध की अवधारणा दी (कुमार, 2010:66)। एक साथ क्रांतियों का उनका सिद्धान्त सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों की स्वायत्तता पर जोर देता है जिसके लिए क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता होती है (यादव, 2010: 99)।

लोहिया हमेशा लीक से हटकर चले। उनकी विद्रोही आत्मा ने कभी भी बने–बनाए वादों–सिद्धान्तों को नहीं माना। सबको जाना, सबसे सीखा और फिर आलोचना भी की, अब चाहे वह फिर गांधी ही क्यों न हों। वह गांधी के रामराज्य के विचार को खारिज कर सीता–रामराज कायम करने की बात कहते हैं। उन्होंने कहा था कि यदि सीता–रामराज घर–घर पहुँच जाए तो औरत–मर्द के झगड़े हमेशा के लिए खत्म हो जायेंगे और तब उनके आपसी रिश्ते भी अच्छे होंगे (शर्मा, 2021)। लोहिया लैंगिक बहस को लैंगिकता या अलैंगिकता, भावनात्मक या भौतिक, वैयक्तिक या सामाजिक भूमिकाओ से सम्बन्धित विचारों तक ही सीमित करने के पक्षधर नहीं थे। उन्होंने परिवार या समाज में प्रचलित या स्वीकृत उन सभी अभ्यासों/रिवाजों की आलोचना की जो महिला–हित के विरुद्ध थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लोहिया, राम मनोहर (1952). *दि कास्ट सिस्टम.* हैदराबाद : नवहिन्द प्रकाशन.
2. लोहिया, राम मनोहर (1953). ''दि टू सेग्रिगेशन्स ऑफ कास्ट एण्ड सेक्स''. *इसेंशियल लोहिया.* जनवरी. पृ0 362–369.
3. लोहिया, राम मनोहर (1954). *हिन्दू बनाम हिन्दू.* हैदराबाद : नवहिन्द प्रकाशन.
4. लोहिया, राम मनोहर (1954). *जाति प्रथा.* हैदराबाद : नवहिन्द प्रकाशन.
5. लोहिया, राम मनोहर (1955). *इतिहास चक्र.* हैदराबाद : नवहिन्द प्रकाशन.
6. लोहिया, राम मनोहर (1962). ''निराशा के कर्तव्य''. *डॉ0 राम मनोहर लोहिया, कुछ चुने हुए भाषण व लेख.* हैदराबाद.
7. लोहिया, राम मनोहर (1963). *मार्क्स, गांधी एण्ड सोशलिज्म.* हैदराबाद : नवहिन्द प्रकाशन.
8. लोहिया, राम मनोहर (1965). ''अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों का उत्थान'' (लोकसभा में भाषण, 12 मार्च 1965). सन्दर्भ ग्रन्थ– कश्यप, सुभाष (संपा0). *सुविख्यात सांसद मोनोग्राफ सीरीज : डॉ0 राम मनोहर लोहिया.* नई दिल्लीः लोक सभा सचिवालय. पृ0 72–74.
9. लोहिया, राममनोहर (1966). *धर्म पर एक दृष्टि.* हैदराबाद : नवहिन्द प्रकाशन.
10. लोहिया, राम मनोहर (1966). *सात क्रान्तियाँ.* हैदराबाद : नवहिन्द प्रकाशन.
11. लोहिया, राम मनोहर (1969). *समलक्ष्य, समबोध.* हैदराबाद : राम मनोहर लोहिया समता विद्यालय न्यास प्रकाशन.
12. लोहिया, राम मनोहर (2008). ''जाति–प्रथा का नाश : क्यों और कैसे''. सन्दर्भ ग्रन्थ– कपूर, मस्तराम (संपा0). *लोहिया रचनावली*. खण्ड– 2. नई दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स.
13. लोहिया, राम मनोहर (2008). ''जातिवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि''. सन्दर्भ ग्रन्थ– कपूर, मस्तराम (संपा0). *लोहिया रचनावली*. खण्ड– 2. नई दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स. पृ0 118.

सहायक ग्रन्थ

14. अंगिरा, आर0 (2021). ''राम मनोहर लोहिया : समाजवाद के मौलिक चिंतक''. *आई0जे0एच0एस0एस0आई0, 11*(8): 65–69. ऋचा अंगिरा
15. ओझा, आर0 (2010). ''लोहिया एण्ड इम्पावरमेंट ऑफ वूमेन''. *मेनस्ट्रीम, 48*(13).
16. कपूर, मस्तराम (2008). *लोहिया रचनावली*. (दो खण्डों में). नई दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स.
17. कपूर, मस्तराम (2011). *कलेक्टेड वर्क्स ऑफ डॉ0 लोहिया.* (9 वा0). नई दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स.
18. कश्यप, सुभाष (1990). *सुविख्यात सांसद मोनोग्राफ सीरीज : डॉ0 राम मनोहर लोहिया.* नई दिल्लीः लोक सभा सचिवालय.
19. कुमार, ए0 (2010). ''अण्डरस्टैंडिंग लोहियाज पॉलिटिकल सोशियोलॉजी : इंटरसेक्शनलिटी ऑफ कास्ट, क्लास, जेंडर एण्ड लैंग्वेज''. *इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, 45*(40): 64–70.
20. कुमार, एस0 (2019). ''महिलाएं अपनी गरिमा और आजादी चाहती हैं, तथाकथित नैतिकता या देवी का दर्जा नहीं : डॉ0 राम मनोहर लोहिया''. *गाँव कनेक्शन,* 23 मार्च.
21. केलकर, इन्दुमति (1963). *लोहिया : सिद्धान्त एवं कर्म.* हैदराबाद : नवहिन्द प्रकाशन. पृ0 18
22. गाबा, ओ0पी0 (2013). *भारतीय राजनीतिक चिंतक.* नई दिल्ली : मयुरबख्श प्रकाशन.
23. गुहा, समर (1990). '' उग्र समाजादी''. सन्दर्भ ग्रन्थ कश्यप, सुभाष (संपा0). *सुविख्यात सांसद मोनोग्राफ सीरीज : डॉ0 राम मनोहर लोहिया.* नई दिल्लीः लोक सभा सचिवालय. पृ0 74–80.
24. गौतम, बलवान (2013). *तुलनात्मक राजनीतिक सिद्धांत के संदर्भ.* दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय.
25. दीक्षित, ताराचन्द (2013). *राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन.* इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन.
26. परमेश्वरन, पी0 (1978). *गांधी, लोहिया और दीनदयाल.* नई दिल्ली : दीनदयाल रिसर्च इंस्टीट्यूट.
27. भाटिया, पी0आर0 (1997). *भारतीय राजनीतिक विचारक.* आगरा : यूनिवर्सल बुक डिपो.
28. भास्कर, ए0 (2020). ''अम्बेडकर, लोहिया एण्ड दि सेग्रिगेशन ऑफ कास्ट एण्ड जेण्डर : इनविजिनिंग ए ग्लोबल एजेण्डा

फार सोशल जस्टिस''. *कास्ट : ए ग्लोबल जर्नल आन सोशल इस्क्लूजन, 1*(2): 63–72.

29. मन्त्री, गणेश (1983). *मार्क्स, गांधी और समसामयिक सन्दर्भ.* नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
30. यादव, के0 (2010). ''द्रोपदी आर सावित्री : लोहियाज फेमिनिस्ट रीडिंग ऑफ मैथालॉजी''. *इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, 45*(48): 107–112.
31. यादव, योगेन्द्र (2012). ''अम्बेडकर एण्ड लोहिया : ए डायलॉग आन कास्ट''. *सेमिनार.* जनवरी.
32. यादव, वी0एस0 (2017). ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया की दृष्टि में स्त्री''. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इन्नोवेटिव रिसर्च स्टडीज, 5*(12): 58–61.
33. यादव, वी0एस0 (2019). ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया के विचारों की प्रासंगिकता''. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इन्नोवेटिव रिसर्च स्टडीज, 7*(1): 19–22.
34. रहमान, एम0के0 (2020). ''राममनोहर लोहिया का सामाजिक चिन्तन''. *जूनी ख्यात, 10*(7): 115–131.
35. रेड्डी, बी0 सत्यनारायण (1990). ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया और समाजवाद''. सन्दर्भ ग्रन्थ कश्यप, सुभाष (संपा0). *सुविख्यात सांसद मोनोग्राफ सीरीज : डॉ0 राम मनोहर लोहिया.* नई दिल्लीः लोक सभा सचिवालय. पृ0 13–19.
36. वर्मा, रजनीकांत (1978). *लोहिया और औरत.* नई दिल्ली : अनामिका प्रकाशन.
37. वर्मा, वी0के0 (2023). ''मार्क्सवादी नारीवाद''. *आई0 ओ0 एस0 आर0– जे0 एच0 एस0 एस0, 28*(4): 64–70.
38. शरद, ओ0 (1972). *लोहिया : ए बायोग्राफी.* लखनऊ : प्रकाशन केन्द्र.
39. शरद, ओंकार (1990). *लोहिया के विचार.* इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन.
40. शर्मा, यज्ञदत्त (1990). ''सच्चे समाज–सुधारक – डॉ0 लोहिया''. सन्दर्भ ग्रन्थ कश्यप, सुभाष (संपा0). *सुविख्यात सांसद मोनोग्राफ सीरीज : डॉ0 राम मनोहर लोहिया.* नई दिल्लीः लोक सभा सचिवालय. पृ0 60–62.
41. शर्मा, पारुल (2021). ''स्त्री विमर्श और समाजवादी नेता डॉ0 राम मनोहर लोहिया के विचार''. *फेमिनिज्म इन इण्डिया,* 3 सितम्बर.
42. शर्मा, पारुल (2021). ''स्त्री विमर्श और समाजवादी नेता डॉ0 राम मनोहर लोहिया के विचार''. *फेमिनिज्म इन इण्डिया,* 3 सितम्बर.
43. सिंह, आर0 (2017). ''डॉ0 लोहिया की दृष्टि में नारी''. *देशबन्धु,* 22 मार्च, बुधवार. नई दिल्ली.
44. सिंह, जे0बी0 (2015). ''वर्तमान समय में डॉ0 राममनोहर लोहिया के समाजवादी दर्शन के सप्तक्रांति सिद्धांत की प्रासंगिकता''. *क्विस्ट जर्नल्स, 3*(8): 54–57.
45. सुनील (2010). ''लोहिया की लालटेन''. सम्पादकीय. *जनसत्ता,* 20 अक्टूबर, लखनऊ.
46. त्रिपाठी, ए0 (2011). ''स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज''. *कथा क्रम, अप्रैल–जून* : 40.

****